प्रातःस्मरण सूक्तम् ।

ॐ प्रातरग्निम्प्रातरिन्द्रᳬहवामहे प्रातर्मित्रा-
वरुणा प्रातरश्विना । प्रातर्भगम्पूषणम्ब्रह्मण-
स्पतिम्प्रातःस्सोममुतरुद्रᳬहुवेम ॥

शुक्ल० यजु:० अध्याय ३४ मं० ३४

भाषा टीका ॥ हम प्रातःकाल अग्नि, इन्द्र, मित्रावरुण * अश्विनीकुमार, भग[१], पूषा[२], ब्रह्मणस्पति, सोम, और रुद्र इत्यादि परमात्माके देवमूर्तियोंको आह्वान करते हैं ॥

ॐप्रातर्जितम्भगमुग्रᳬ हुवेम व्वयम्पुत्र-
मदितेर्यो विधर्त्ता । आध्रश्चिद्यम्मन्यमानस्तु-
रश्चिद्राजाचिद्यम्भगम्भक्षीत्याह ॥

शु० य० अ० ३४ मं० ३५

---

* मित्र = सूर्य्यका नाम है वेदोंमें वरुणके साथ प्रयोग कियाजाता है ।

१ भग = बारह सूर्य्योंमें एक सूर्य्यका नाम और शिव के भिन्न रूपोंमें एक रूप है ।

२ पूषा = सूर्य्य, शिवका रूप है ।

भाषा टीका ॥ हम प्रातःकालके समय (प्रातर्जितम्) प्रातःकालमें रात्रिके जय करनेवाले (उग्रम्) अति उत्कृष्ट (अदितेः पुत्रम् भगम्) अदिति के पुत्र सूर्य्यको (हुवेम) आह्वान करते हैं ,(यो विधर्त्ता) जो जगत वा देहका धारण करनेवाला है, (यम्भगम्भक्षीत्याह) जिस सूर्य्यको अपने कल्याण निमित्त सदा सेवन करनेके लिये चिदाकाशरूप परब्रह्मने हमलोगोंको आज्ञा दी है, वह **चिदाकाश** कैसा है? कि (आध्रः) सब इन्द्रियोंका आधारभूत मायाकी रक्षा करने वाला है, (मन्यमानः) पूज्य है, (तुरः) सर्व प्रकारकी उन्नति देनेवाला है, (राजा) तेजस्वरूप सर्वोत्कृष्ट है ।

ॐ भग प्प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः । भगप्रनोजनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥

शु० य० अ० ३४ मं० ३६

हे (भगप्रणेतः!) ऐश्वर्यके प्राप्ति करानेवाले **(भगसत्यराध)** ऐश्वर्यरूपी सत्यधनवाले (भगेआददन्नः)

ऐश्वर्यको देते हुये (मान्धियमुदव) मेरी बुद्धिको बढ़ाओ, (हेभग ! नः गोभिरश्वैः प्रजनय) हेसूर्य ! गौओं और अश्वोंसे मेरे ऐश्वर्यकी वृद्धि करो, (हेभग ! नृभिर्नृवन्तः प्रस्याम) हेसूर्य ! हम लोग पुत्र पौत्र पाकर मनुष्यवान होवें; अर्थात् हेसूर्य ! हम लोगोंके आश्रममें धन, जन, दोनोंको देतेहुये ब्रह्मज्ञान विषयमें हमारी बुद्धिको बढ़ाओ ।

ॐ उतेदानीम्भगवन्तः स्यामोत प्प्रपित्व ऽउतमध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्यवयन्देवानाᳬसुमतौ स्याम ॥

शु० अ० ३४ मं० ३७

हे (मघवन्) इन्द्र ! वा सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ! (उतेदानीम् वयम्) हमलोग अब इस समय (उत सूर्यस्य उदिता) और प्रातःकाल (उतप्रपित्वे) और सायंकाल (उतमध्ये अह्नाम) और मध्याह्न काल (भगवन्तः स्याम) धनवान, ज्ञानवान, और योगैश्वर्यवान होवें, और (देवानां सुमतौ स्याम) देवतोंकी श्रेष्ठ बुद्धिमें स्थित होवें, अर्थात् मेरीबुद्धि दिव्य ब्रह्माकार होजावे।

ॐ भगएव भगवाँ२॥अस्तुदेवास्तेन
व्वयम्भगवन्तः स्याम । तन्त्वा भग सर्व्वऽ
इज्जोहवीति सनो भग पुरऽएता भवेह ।

शु० अ० ३४ मं० ३८

हे (देवाः) देवताओ ! (भगएव भगवान अस्तु) मेरा आत्मा ऐश्वर्य्यवान होवे (तेन) जिसके ऐश्वर्य्यवान होने से (वयम् भगवन्तः स्याम) हमलोग ब्रह्मयज्ञ करनेवाले ऋत्विज भी ऐश्वर्य्यवान होवें, (भग) हे आत्मन्! (सर्व इत तन्त्वा जोहवीति) हमलोग सबही तुमहीको आह्वान करते हैं, (भग) हे आत्मन् ! (स नः इह) सो तुम हम लोगोंके इस ब्रह्मयज्ञमें (पुरएता भव) अग्रगामी होवो ।

ॐ समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावे
व शुचये पदाय । अर्व्वाचीनं वसुविद
म्भगन्नोरथमिवाश्वा व्वाजिनऽआवहन्तु ॥

शु० अ० ३४ मं० ३९

(उषसः) ऊषाकालके अभिमानी देवता (अध्वराय सन्नमन्त) ऊषाको आकाशमें किस प्रकार फैलानेमें

समर्थ हो रहेहैं जैसे [दधिक्रावांइव] मानस सूर्य्य अर्थात् ज्ञान [शुचये पदाय] परम पवित्र ब्रह्मपदके फैलानेमें समर्थ है. यह ऊषा [वसुविदम्भगम्] ज्योतिर्मय सूर्यको किस प्रकार [नः अर्वाचीनं आवहन्तु] हम लोगोंके सन्मुख करे [रथमिव अश्वा वाजिनः] जैसे वेगवान घोडे रथको।

ॐ अश्वावतीर्गोमतीर्नऽऊषासोवीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः घृतन्दुहानाविश्वतः प्रपीता यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

शु० अ० ३४ मं ४०

[उषसः] प्रातः सन्ध्या अभिमानी देवियां अर्थात् परमात्मा की वे शक्तियां जिनके द्वारा प्रातःकाल होता है, [सदम्नः उच्छन्तु] सदा हम लोगोंके संसारबन्धन रूपी पाशको दूर करें और [यूयम् स्वस्तिभिः सदा नः पात] हे देवियो! आपलोग सर्व प्रकारके मंगल और कल्याणोंसे सदा हमलोगोंकी रक्षा करो! आप लोग कैसी हैं? वह कहते हैं, कि [अश्वावतीः] सर्व प्रकारके पराक्रमोंसे सुशोभित [गोमतीः] तेजोमयी वाणी में विलास करनेवाली सरस्वती रूप और [वीरवतीः] सौभाग्यवती हो, अथवा अश्व, गऊ, और वीर बड़े बलवान पुत्र पौत्रकी देनेवाली हो। इति ॥

यहां तक वैदिक स्मरण समाप्त हुआ—अब आगे पौराणिकस्मरण दियाजाता है—

नारायणस्तुतिः—आचारमयूखे व्यासः—

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम्। ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना पादारविन्दयुगलं परमस्यपुंसः। नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य पारायणप्रवणविप्रपरायणस्य ॥ २ ॥ प्रातर्भजामि भजतामभयंकरं तं प्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै। यो ग्राहवक्त्रपतिताङ्घ्रिगजेन्द्रघोरशोकप्रणाशमकरो द्धृतशंखचक्रः ॥ ३ ॥ श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रातः पठेन्नरः। लोकत्रयगुरुस्तस्मै दद्यादात्मपदं हरिः ॥ ४ ॥

भाषा टीका=मैं प्रातः काल भवसागरके भय और महा दुखके शान्तिके हेतु गरुड़पर सवार होनेवाले नारायणको स्मरण करता हूं जिनोंने ग्राहसे ग्रसित महाकुंजर (हस्ती) को मोक्ष किया, जो चक्रके धारण करनेवाले हैं; और जिनका नेत्र नवीन कमलके सदृशहै ॥ १ ॥ मैं प्रातः काल मन वचन और मस्तकसे नरकसे उद्धार करनेवाले परमपुरुष नारायणके युगल चरण कमलोंको नमस्कार करता हूं, जो वेदपाठी ब्राह्मणों के परम आश्रय हैं ॥ २ ॥

मैं पूर्व जन्मोपार्जित सर्व प्रकारके पापोंके नाशके लिये भक्तोंके अभय करनेवाले नारायणको प्रातःकाल भजताहूं, जिनोंने शंख चक्र धारण कर ग्राहसे ग्रसित गजेन्द्रके घोर शोकको नाश किया ॥ ३ ॥ इन तीनों पवित्र श्लोकोंको जो प्रातःकाल पढ़ता है, तिसको लयलोक गुरु हरि अपने परमपदकोदेते हैं ॥ ४ ॥

गणेशस्तुतिः—सद्धर्मचिंतामणौ—

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूरपूर परिशोभितगण्डयुग्मम् । उद्दण्डविघ्नपरिख-ण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्द-वन्द्यम् ॥ १ ॥ प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमान मिच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम् ।

तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं पुत्रं विलास-चतुरं शिवयोः शिवाय ॥ २ ॥ प्रातर्भजाम्य-भयदं खलु भक्तशोकदावानलं गणविभुं वरकुं-जरास्यम् । अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाहमु-त्साहवर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥ ३ ॥ श्लोक-त्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम् । प्रात-रुत्थाय सततं यः पठेत्प्रयतः पुमान् ॥ ४ ॥

भापा टीका = मैं प्रातःकाल श्रीगणेशजीका स्मरण करता हूं जो अनाथोंके बन्धु हैं, और जिनके दोनों कपोल सिंदूर करके अरुण होरहे हैं ॥ जो बडे भयंकर विघ्नोंके नाश करनेमें दण्ड-के समान हैं, और [आखण्डल] इन्द्रादि सुरनायकोंसे जिन-की सदा वन्दना कीजाती है ॥ १ ॥ मैं प्रातःकाल ब्रह्मासे वन्द्यमान और इच्छानुकूल अखिल वरके देनेवाले गणेशजीकी वन्दना करता हूं, और [द्विरसनाधिप यज्ञसूत्रम्] सर्पके यज्ञोप-वीत धारण करने वाले शिवके पुत्र तुन्दिल अर्थात् लम्बोदरको जो शिव पार्वतीको अपनेखेलसे आनन्द देनेवाले हैं, मैं अपने कल्याणके निमित्त वन्दना करता हूं ॥ २ ॥ मैं प्रातःकाल [सुतमीश्वरस्य] महेश्वरके पुत्र गणनायकको वन्दना करता हूँ, वह कैसे हैं ? अभय पदके दान देनेवाले हैं और भक्तके शोक

रूपी वनके जलानेमें दावानल हैं और गणोंके नाथ हैं, जिनका मुख नरकुंनर ऐरावत हस्तीके शुण्डके समान है, और अज्ञानके जंगलके भस्म करनेमें [हव्यवाहन] अग्निसमानहैं, और उत्साहके बढ़ाने वाले हैं ॥३॥ इन तीन श्लोकोंको जो पुरुष प्रातःकाल उठकरपढे उसको पुण्यऐश्वर्य अवश्य ही प्राप्त होवें ॥४॥

सूर्यस्तुतिः—सद्धर्मचिंतामणौ—

प्रातःस्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि। सामानि यस्य किरणाः प्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभिर्ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्नुतमर्चितं च । वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च ॥२॥प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च । तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्तिं गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम्॥ ३ ॥श्लोकत्रयमिदंभानोःप्रातः प्रातः

पठेत्तु यः। स सर्व्वव्याधिनिर्मुक्तः परंसुखम-
वाप्नुयात् ॥ ४ ॥

भा० टी०– मैं प्रातःकाल निश्चय करके (तत्सवितु-
र्वरेण्यम्) सबसे स्तुति कियेजानेके योग्य (सविता) सूर्य
को स्मरण करता हूं, जिसका मुख ऋग्वेदका मण्डल है,
शरीर यजुर्वेद है और सामवेदके हजारों शाखा जिसके ह-
जारों किरणें हैं, जो (प्रभवादि) उत्पन्न पालन
संहारादि के कारण हैं, फिर ब्रह्मा और शिवके स्वरूप ही
हैं, (अलक्ष्यं) जिसको कोई लख नहीं सकता जिसके
रूप और गुणोंका कोईभी चिन्तन नहीं करसकता ॥ १ ॥
मैं प्रातःकाल तरणि [सूर्य] को काया वचन मनसे नमस्कार
करताहूं जो ब्रह्मा इन्द्रादि देवतोंसे सदा गानकियेजाते हैं और
अचिन्त्य हैं, फिर [वृष्टि] वर्षाके वरसानेवाले और शोषण करने
वाले हैं। तीनोंलोकोंके पालन करनेवाले त्रिगुणात्मक अर्था-
त् रज, सत, तम, तीनों गुणोंद्वारा रचना, पालन, संहारके
करनेवाले हैं ॥ २ ॥ मैं प्रातःकाल अनन्तशक्तिवाले [सविता]
सूर्य्यको भजता हूं जो पापके समूह, शत्रुओंके भय और ना-
ना प्रकारके रोगोंके नाशकरनेवाले हैं, सबसे परे हैं, जो सब
लोकोंके संहार करने में कालरूपही हैं, और गऊओं के कण्ठके

बन्धनके मोचन करनेवाले हैं * सब देवोंमें आदिदेव हैं ॥ ३ ॥ जो मनुष्य इन तीनों श्लोकोंसे प्रातः काल सूर्य्यका स्मरण करता है सो सर्व प्रकारके व्याधिसे मुक्त होकर परम सुखको प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

देवीस्तुतिः— सद्धर्मचिंतामणौ—

प्रातःस्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रत्नवत्मकरकुंडलहारभूषाम् । दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम् १ प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्डशुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम् । ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥२॥ प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम् । संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः ॥

---

* अर्थात् रात्रिभर जो गउयां बांधीहुई रहती हैं सूर्य्य उदय होतेही उनके गलेका बन्धन खोल दियाजाता है, वह गउनोंमें चरने चली जाती हैं ।

श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते॥४॥

भा० टी०= मैं प्रातःकाल शरदऋतुके चन्द्रमाकी कि-रणोंके समान उज्ज्वल प्रभावाली देवीको स्मरण करताहूं, जो रत्नजड़ित मकराकृत कुण्डल कानोंमें और माला गलेमें डाले शोभायमान होरही है, जिसके सुन्दर नीलवर्ण हजारों हाथों में [आयुध] शस्त्र सुशोभित होरहे हैं, जिसके चरण युगल अरुण कमलके सदृश हैं, जो सर्वोंसे परे सर्वोंसे सेव्य है ॥१॥ मैं प्रातःकाल उस देवीको नमस्कार करताहूं, जो महिषासुर, चण्ड, मुण्ड, शुम्भ, निशुम्भ, और प्रमुख दैत्यको नाशकरनें में अति प्रवीन है, जो ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, और मुनियोंके मनको मोहन करनेवाली, (लीलां) महालक्ष्मी, (चण्डी) सर्व देवमूर्ति अनेक रूपोंकी धारण करनेवाली है ॥ २ ॥ मैं प्रा-तःकाल भक्तोंकी अभिलाषा पूर्ण करनेवाली, सम्पूर्ण जगत की धारण करनेवाली, और नानाप्रकारके पाप और तापोंकी हरनेवाली देवीको प्रातःकाल स्मरण करताहूं, जो संसारबंध-नकी मोचनं करनेवाली है, और जो विष्णुकी परमशक्तिको प्राप्त कियेहुये पराख्य वैष्णवी महामाया है ॥ ३ ॥ जो

प्राणी देवी चण्डिकाके इन तीन श्लोकोंको प्रातःकाल पठन करता है, वह सर्व कामनाओंको प्राप्त करताहुआ विष्णुलोक को पाता है ॥४ ॥

शिवस्तुतिः- सद्धर्मचिन्तामणौ ॥

प्रातःस्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं गंगाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् । खट्वांगशूल-वरदाभयहस्तमीशं संसाररोगहरमौषधम-द्वितीयम् । १ । प्रातर्नमामि गिरिशं गिरि-जार्धदेहं सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदे-वम् । विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोभिरामं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ २ ॥ प्रा-तर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं वेदान्तवेद्य-मखिलं पुरुषं महान्तम् । नामादिभेद-रहितं षड्भावशून्यं संसाररोगहरमौषधम-द्वितीयम् ॥ ३ ॥ प्रातः समुत्थाय शिवं-विचिन्त्य श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति । ते दुःखजातं बहुजन्मसंचितं हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥ ४ ॥

भा० टी० ≈ मैं प्रातःकाल (ईश) शिवको स्मरण करताहूं, जो संसार भयके हरनेवाले हैं, देवतोंके ईश हैं, जिनके मस्तकपर गंगा शोभायमान होरही है, और बृषभ जिनका वाहन है, जो अम्बिकाके ईश हैं, जिनके हाथोंमें खट्वाङ्ग, शूल, वरद, अभय, शोभायमान होरहे हैं, जो संसार रोगके नाश करनेके लिये औषध हैं, और अद्वीतीय हैं ॥ १ ॥ मैं प्रातःकाल (गिरिशम्) कैलाशपति शिवको नमस्कार करताहूं, जिनके आधे अंगमें गौरी शोभायमान होरही है, जो सृष्टि, रचना, पालन, और संहारके कारण हैं, और देवोंमें आदिदेव हैं, सम्पूर्ण विश्वके ईश्वर हैं, संसार विषयके विजय करनेवाले भक्तजनोंके मनके(अभिरामम्)आनन्द देनेवाले हैं, और संसार रोगके नाश करनेमें औषध हैं, और अद्वितीय हैं ॥२॥ मैं प्रातःकाल आदिदेव अनन्तमूर्ति वेदान्त द्वारा जानने योग्य विश्वमूर्ति महापुरुष शिवको भजताहूँ, जो नाम रूपादि भेदोंसे रहित हैं, और * (षड्भावशून्यम्) अर्थात् जन्मना, मरना, बढना, घटना, युवा, वृद्धहोना इत्यादि विकारोंसे रहित हैं,

---

* षड्भाव (अस्ति, २ जायते, ३ वर्धते, ४ परिणमतें, ५ अपक्षीयतें, ६ मृयते,) होना, जन्मना, बढ़ना, घटना, छीजना, मरना, यहीषड्भाव कहलाते हैं ।

संसार रोगके नाशकेलिये औषध हैं,और अद्वितीय हैं ॥ ३ ॥ जो प्रातःकाल उठकर शिवको चिन्तन करतेहुये नित्य इन तीनों श्लोकोंको पढते हैं वे अनेक जन्मोंके दुखरूप संचित कर्मोंसे छूट शिवके परमपदको प्राप्त होते हैं ॥४॥

रामस्तुतिः—आह्निककर्मप्रकाशे ।

प्रातःस्मरामि रघुनाथमुखारविन्दं मन्दस्मितं मधुरभाषि विशालभालम् । कर्णावलम्बिचलकुण्डलशोभिगण्डं कर्णान्तदीर्घनयनं नयनाभिरामम् ॥ १ ॥ प्रातर्भजामि रघुनाथकरारविन्दं रक्षोगणाय भयदं वरदं निजेभ्यः । यद्राजसंसदि विभज्य महेशचापं सीताकरग्रहणमंगलमाप सद्यः ॥ २ ॥ प्रातर्नमामि रघुनाथपदारविन्दं वज्रांकुशादि शुभरेखि सुखावहं मे । योगीन्द्रमानसमधुव्रतसेव्यमानं शापापहं सपदि गौतमधर्मपत्न्याः ॥३॥ प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम वाग्दोषहारि सकलं शमलंनिहन्ति ।

यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा
प्रीत्या सहस्रहरिनामसमं जपाप ॥ ४ ॥

प्रातः श्रये श्रुतिनुतां रघुनाथमूर्तिं
नीलाम्बुदोत्पलसितेतररत्ननीलाम् । आ-
मुक्तमौक्तिकविशेषविभूषणाढ्यां ध्येयां स-
मस्तमुनिभिर्जनमुक्तिहेतुम् ॥५॥यः श्लोक-
पञ्चकमिदं प्रयतः पठेद्धि नित्यं प्रभात-
समये पुरुषः प्रबुद्धः । श्रीरामकिंकरजनेषु
स एव मुख्यो भूत्वा प्रयाति हरिलोकमन-
न्यलभ्यम् ॥६॥

भा॰ टी॰ = मैं प्रातःकाल रघुकुल नायक श्री रामचन्द्र के मुखारविन्दको स्मरण करता हूं, जिस मुखपर मंद २ मुसकान विलास लेरही है, और जिससे (मधुरभाषि) मीठी२ बातें निकलरही हैं, और जिनका भाल विशाल है, जिनके दोनों कानोंके चञ्चल कुण्डलोंसे दोनोंकपोल शोभायमान होरहे हैं, और जिनका विशालनेत्र कानोंके अंततक पहुंचाहुआ भक्त जनोंके नेत्रको सुख देरहा है ॥ १ ॥मैं प्रातःकाल श्री रघुनाथजीके करकमलोंको भजता हूं, जो राक्षसोंको भय और अपने भक्तोंको

वर देनेवाले हैं, जिन कर कमलोंने जनककी राजसभामें शिवके धनुषको तोड़कर श्री जनक नन्दनीके वरनेमें यशको प्राप्त किया ॥२॥ मैं प्रातःकाल श्री रघुनन्दनके चरणकमलोंको नमस्कार करताहूं, जिसमें वज्र, अंकुश, अंबर, कुलिश, कमल, यव, ध्वजा, धेनुपद, शंख, चक्र, स्वस्तिक, जंबुफल, कलश, सुधाहृद, अर्धचन्द्र, षट्कोण, मीन, बिन्दु, ऊर्ध्वरेखा, अष्टकोण, त्रयकोण, इन्द्रधनु, और पुरुषविशेष इत्यादि शुभरेखायें मुझको आनन्द देनेवाली हैं, जो चरणकमल योगियोंके मानस भ्रमरसे सेवन कियाजाता है, जिन्होंने अपने रजके स्पर्शसे गौतम तिय अहिल्याको अति शीघ्र शापसे छुड़ा पतिलोकको भेज दिया ॥ ३ ॥ मैं प्रातःकाल रघुनाथके नामको सुखपूर्वक उच्चारण करता हूं, जो संपूर्ण वचनके दोषोंको हरण करने वाला है, और सर्व प्रकारके पापोंका नाशकरनेवाला है, जिस एक नामको श्री पार्वतीने विष्णुसहस्रनामके तुल्य जान जपकर अपने पति सदाशिवके संग भजन किया ॥ ४ ॥

गोस्वामी तुलसीदास—

सहस नाम सम सुनि शिव वानी ।
जपि जेयि पियसंग भवानी ॥

मैं प्रातःकाल श्री रघुनन्दनकी मूर्तिका आश्रय लेता हूं, जिस मूर्तिके गुणोंको श्रुतियां गान कररही हैं, जो नील बादल और अति गंभीर नील कमलके समान नील वर्ण रत्नोंसे

सुशोभित है, जिसमें विशेष २ प्रकारके मोतियोंके गुच्छे पहनायेहुये हैं, और जो भक्तों और समस्त मुनियोंसे ध्यान कीजाती है, और जो मुक्तिका हेतु है ॥ ५ ॥ जो पुण्यात्मा बुद्धिमान् पुरुष पवित्रहोकर नित्य प्रातःकाल इन पांचों श्लोकों को पढ़ता है श्री रामभक्तोंमें मुख्य होकर किसी औरको नहीं प्राप्त होनेवाले दुर्लभ हरि लोक (साकेत लोक) को प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

॥ श्री पंचदेव प्रातःस्मरण ॥

केवल भाषा जाननेवालोंके लिये कवित्तोंमें वर्णन कियागया ॥

गणेश स्मरण ।

(सवैया)

आनंदसों सुमिरों गणनाथ अनाथकेनाथ लसैं भुजचारी ।
सुन्दरसुण्ड लपेटि उठावत है इकदन्त वरांकुशधारी ॥
मोदकमाल त्रिशूल लिये वर सिंदुर आननचन्द ललारी ।
विघ्न विनाशन हैं कवि सत्य सदा निज सेवकके हितकारी॥ १॥

सिन्दुर भूषण उन्दुर वाहन नागनको उपवीतदिपाता ।
पावत कारज सिद्धि नवे जिहि सिद्ध मुनीन्द्र सुरेन्द्र विधाता ॥
कोमल तोंद उठीसी लसे पटपीत कसें शुभअंग विभाता ।
आठहुसिद्धि नवौ निधि सत्य सदापदपंकज सेवकपाता ॥ २॥

सिद्धगणेश गजानन हैं इकदंत महागज कान कृपाकर ।
नील अरु पीत मिली झलकै छवि तुंदिल हैं शिरबाल कलाधर ॥
विघ्न विनाशन मंगलरूप सुपावकरूप कराल छटाधर ।
नाम विनायकके चितदे कवि सत्य पढ़ै सुख है परमादर ॥३॥

दोहा—प्रातसमय शुचि नेमसों पढ़ैं जु तीन कवित्त ।
सुकवि सत्य मँगलमुदित लहै सुयश सुख वित्त ॥

॥श्री रामचन्द्रस्मरण॥

प्रातसमय सुमिरों चितदे रघुनन्दनको मुखजीवन जायो ।
मन्दमनोहर है मुसिकानि सुकोमल वैन ललाटसुहायो ॥
आयतलोचन काननलों मकराकृत कुंडल गंडहि छायो ।
भक्तनके मनमोद बढ़ावन, हैं कवि सत्यसदा श्रुति गायो ॥१॥

प्रातसमय रघुनन्दनके करकंजनको सुमिरां हितमानी ।
भक्तनको सुखदायक औ वरदायक पै खलको दुखदानी ॥
जो मिथिलेशसभा शिवचापहि खण्डन कीनगह्यो सियपानी ।
चाहत हैं कविसत्य वही कर मो शिर नाथ धरो जनजानी ॥२॥

प्रातसमय रघुनन्दनके पदपंकजको भजवों उरराखे ।
वज्रसरोज ध्वजादिकलक्षण संजुत हैं निगमागमभाखे ॥
जोगिनके मनभृंगजिन्हैं नितसेवतमुक्ति मधूरसचाखे ।
गौतमतिय उधरी जिननें कविसत्यजिन्हैं कमलाअभिलाखे ॥३॥

भंग भखैं हरखैं बरखैं फल चारि सदा शिव हैं भवसेतू ॥२॥
प्रातयसमय सुमिरों शिवको शशिशंख तुपार कपूर महाछवि ।
आननपंच जटाशिर हैं तिरशूल कपाय लसै फरसा पवि ॥
अंकुश घंट गदा पुनि पाश हरें जन त्रास निहारतहीं नवि ।
ध्यावतहैं करि नेम जिन्हैं नित सत्यऋषीश्वर सिद्ध महा कवि॥ ३॥

दोहा—येनित तीन कवित जे पढ़ै प्रातचितलाइ ।
मंगल संपति सत्यकवि रहैं दिवसहरपाइ ॥

॥ सूर्य्यस्मरण ॥

प्रातसमय सुमिरों सविता जिनकी किरणैं लगि कंज हुलासैं ।
तीनहुलोक जगें निजकाज करें विलसे हिय ज्ञान प्रकासैं ॥
ऋग्यजु साम सुरूप दिपैं उपजावत पालत अंतविनासैं ।
जाहिनवैं न दरिद्र रहै कविसत्य हिये परमेश विकासैं ॥१॥
प्रातसमय चितचाहि दुइंकरजोरि नमामिकहैं रवि आगे ।
सो न किसीभव होत दरिद्र न पातक दुःख न रोग न लागे ॥
जासु उदे तिहुं लोकनको दुःखदेन महानिशि को तमभागे।
जोनर प्रेम करै रविसों कवि सत्य हियेतिनको हरिपागे ॥२॥
प्रातसमय रविरूप लखौं सुरसिद्ध मुनीश नवें लखि जाहीं ।
ईश विरंचि रमेशहुकी छविदीख परै जनको जिहि माहीं ॥
खींचत नीर महीतलते किरणों करिके बरसावत ताहीं ।
तिहुंपुरकों कविसत्य नवै निरखै नित चाहीं ॥

भंग भखैं हरखैं वरखैं फल चारि सदा शिव हैं भवसेतू ॥२॥
प्रातयसमय सुमिरों शिवको शशिशंख तुषार कपूर महाछवि।
आननपंच जटाशिर हैं तिरशूल कृपाण लसैं फरसा पवि ॥
अंकुश घंट गदा पुनि पाश हरैं जन त्रास निहारतहीं नवि।
ध्यावतहैं करि नेम जिन्हैं नित सत्यनृपीश्वर सिद्ध महा कवि॥३॥

दोहा— येनित तीन कवित जे पढ़ै प्रातचितलाइ।
मंगल संपति सत्यकवि रहैं दिवसहरषाइ ॥

॥ सूर्य्यस्मरण ॥

प्रातसमय सुमिरों सविता जिनकी किरणैं लगि कंज हुलासैं।
तीनहुलोक जगैं निजकाज करैं विलसे हिय ज्ञान प्रकासैं॥
ऋग्यजु साम सुरूप दियैं उपजावत पालत अंतविनासैं।
जाहिनवैं न दरिद्र रहै कविसत्य हियें परमेश विकासैं ॥१॥
प्रातसमय चितचाहि दुहूंकरजोरि नमामिकहैं रवि आगे।
सो न किसीभव होत दरिद्र न पातक दुःख न रोग न लागे॥
जासु उदे तिहुं लोकनको दुःखदेन महानिशि को तमभागे।
जोनर प्रेम करै रविसों कवि सत्य हियेतिनको हरिपागे ॥२॥
प्रातसमय रविरूप लखौं सुरसिद्ध मुनीश नवें लखि जाहीं।
ईश विरंचि रमेशहुकी छविदीख परै जनको जिहि माहीं॥
खींचत नीर महीतलते किरणों करिके वरसावत ताहीं।
पालन हेतु तिहूंपुरको कविसत्य नवै निरखै नित चाहीं॥

प्रातसमय रविमंडलको निरखो गुनतीन तिहूँछन नीके।
जोगतिकाल घड़ी पल साल सुपालक नाशक हैं सबहीके ॥
जा बिन रैन भयानक भासत जाबिन द्यौसहु लागत फीके।
देतही अर्द्धऋचा पढ़िकैं कविसत्य मनोरथ पावत जीके ॥४॥

पूतसमय निरखौं रविको जहँ वारिज चक्र गदाधरधारी।
रूप रमाधवको कमलासन कंचनदेह महाभुजचारी ॥
अंगद कंकनहार हिये कटिकिंकिनि नूपुरकीझनकारी।
कानन कुँडल भाल किरीट दिपैं कविसत्य सदा छविभारी ॥५॥
जे नित पांच कवित्तनकों करजोरि पढैं रुचिसों रवि आगे।
तेनरमंगल मोदभरे दिनरैन रहैं हरिसों अनुरागे ॥
पुत्र कलत्र सुसंतति भूरि सुहावन सेवक सोवत जागे।
श्री हरिके पदपंकज में यशमें कविसत्य सदा मनलागे ॥६॥

॥ भगवती स्मरण ॥

सुन्दर शारद चन्दकरोज्वल आनन ओप अनूपम राजे।
कुंडलकानन जड़ाउजड़े, मणिहीरनके उर हार विराजे ॥
कंकनकिंकिन नूपुर चारु सुवेसर नाक महाछबिछाजे।
नीलमकी दुति है कविसत्य सुकाली सरूप मनोहर साजे ॥१॥

चक्र, त्रिशूल, गदा, परिघा, शिरत्राण, भुशुण्डि, सरासन राजै।
शंख, कृपाण, लिये करमें चवतीनिकराल बिशाल विराजे ॥
सोवतजानि रमापतिको विधिने सुमिरीमधुकैठभ काजे।

सो कवि सत्य विपत्तिहरै सबकालिस्वरूपमनोहरसाजै ॥ २ ॥

शूल शरासि छड़ी फरसा पवि पाश सुदर्शन शक्तिविशाला ।
चाप कमंडल चर्म सुराघट घंट सरों जगदा अक्षमाला ॥
शंखबजाय धसीरणमें कविसत्य सुखीसुरभे तिहिकाला ।
प्राणहरे महिषासुरके जिनसो जनपालतिहैसबकाला ॥ ३ ॥

देखतरूपछटासुरमोहत भांति अनेक सुरूप दिखाए ।
पापहरै भवबन्धनकाटनि भक्तनके सबकाम पुराए ॥
घंटधनुः शर सीर महादर मूशल चक्र त्रिशूल सजाए ।
शुंभनिशुंभ हने करि कोप तभी कविसत्य सभी हरषाए ।४।

देविसनातनिशक्ति सभी सुरमूरतिहो सबही जगजाया ।
तैंदुखभूरि हरेबहुवार सभीकेकरी जबहीं जब दाया ॥
होतुमही सबहींतिपरैं श्रुतिसाखि कहावतिहौ हरिमाया ।
वेगिहरौजनसंकटकों कविसत्यचहैं शिरतोकरछाया ।५।

दोहा—जेनित पांचकवित्तशुचि पूतपढैं हितमानि ।
तिनपै जगदम्बाकृपा सुखीरहैं जगजानि ॥